REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

हरियाणा का भू–आकृतिक विभाजन – एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. दीपक कुमार
सहायक–आचार्य, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी (हरि0)

परिचय :–

हरियाणा भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में पंजाब के मैदान के दक्षिणी भाग में 27^0 39^1 उत्तरी अक्षांश से 30^0 55^1 उत्तरी अक्षांश तथा 74^0 28^1 पूर्वी देशान्तर से 77^0 36^1 पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है हरियाणा राज्य के उत्तर पश्चिम में पंजाब तथा उत्तर–पूर्व में यमुना नदी उत्तर–प्रदेश राज्य की सीमा निर्धारित करती है। हरियाणा राज्य के पश्चिम व दक्षिण में राजस्थान विस्तृत है दक्षिण–पूर्व में केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली है। वर्तमान में हरियाणा में 22 (बाईस) जिले हैं। चण्डीगढ पंजाब व हरियाणा की सांझी राजधानी होने के साथ–साथ केन्द्रशासित प्रदेश भी है।

उच्चावच :–

हरियाणा राज्य घग्गर तथा यमुना नदियों के बीच विस्तृत एक विशाल समतल मैदान है। प्रारम्भिक काल से ही राज्य की भू–गर्भिक संरचना अस्थाई रही है। आधः या आर्कियन महाकल्प तथा पुराजीव महाकल्प के दौरान राज्य की भू–गर्भिक संरचना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ परन्तु मध्यजीवी महाकल्प के दौरान यह भाग उभरा तथा राज्य में नदी, नाले, पहाड़, टीले आदि का सुचारु रुप से निर्माण नवजीव महाकल्प के दौरान हुआ। हरियाणा के उत्तरी–पूर्वी भाग में शिवालिक श्रेणियाँ जिसमें पंचकुला, अम्बाला व यमुनानगर आदि जिलों का भाग आता है तो दक्षिण में फरीदाबाद, गुरुग्राम, रेवाड़ी तथा महेन्द्रगढ़ जिलों में अरावली पर्वत की अवशिष्ट पहाडियाँ पाई जाती है इन क्षेत्रों के मध्य यह सपाट विशाल मैदान विस्तृत है। इसकी रचना हिमालय से निकलने वाली नदियों के अनवरत विक्षेपण से हुई है। इस मैदान की ऊँचाई समुद्रतल से 200 से 300 मीटर है। हरियाणा राज्य का 93.76 प्रतिशत भाग तरंगित एवं समतल है जो घग्गर यमुना मैदान कहलाता है। इस मैदान को स्थानीय भाग मे 'घर' कहा जाता है तरंगित एवं उर्मिल मैदान के बीच–बीच में पहाड़ी एवं रेत के टिल्ले पाऐ जाते है। राज्य का 3.09 प्रतिशत भाग पहाड़ी एवं चट्टानी है जो अरावली पर्वत की अवशिष्ट पहाड़ियों के रुप में फैला है। ये पहाडियाँ अपघर्षित एवं वनविहीन है। यह समुद्र तल से 300 मीटर से अधिक उँचाई पर स्थित है। राज्य का 1.67 प्रतिशत भाग शिवालिक पर्वत श्रेणी के गिरिपाद के रुप में विस्तृत है इसकी उँचाई 300 से 400 मीटर तक है। यह पंचकुला, अम्बाला व यमुनानगर जिलों में विस्तृत है। इसकी समुद्र तल से औसत उँचाई 300 से 600 मीटर है। हरियाणा के पंचकुला जिले में शिवालिक श्रेणी तथा दक्षिणी भाग में अरावली पर्वत की अवशिष्ट पहाड़ियों के मध्य सपाट विशाल मैदान को मुख्य रुप से आठ भागों में विभाजित किया जाता है।

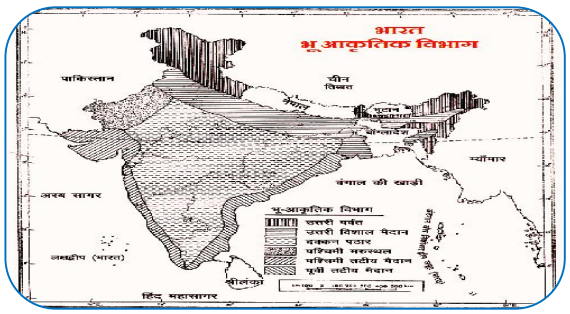

1. शिवालिक।
2. गिरिपाद मैदान।
3. जलोढ़ मैदान।
4. बाढ़ का मैदान।
5. बालु के टिब्बे युक्त मैदान।

6. अरावली का पथरीला प्रदेश।
7. तंरगीत बालु मैदान।
8. अनकाई दलदल।

1. शिवालिक श्रेणी :–

हरियाणा के उत्तरी पूर्वी भाग में विशेष रुप से पंचकुला, अम्बाला तथा यमुनानगर के उत्तरी–पूर्वी भाग में शिवालिक पहाडियों का विस्तार है। शिवालिक पहाडियाँ हिमालय पर्वत क्रम की नवीनतम पहाड़ियाँ हैं ये हिमालय की सबसे बाहरी पर्वत श्रेणीयों का निर्माण करती हैं इनका निर्माण उत्तर–अभिनूतन काल में हुए हिमालय के दक्षिणी में स्थित संकरी खाई के तल का नदियों द्वारा निक्षेपण के फलस्वरुप उपर उठने से हुआ है। इसे उप–हिमालय के रुप में जाना जाता है।

इसे दो हिस्सों में बांट सकते है –

1. उच्च–शिवालिक श्रेणीयाँ (600 मीटर से अधिक ऊँची)।
2. निम्न–शिवालिक श्रेणीयाँ (400 से 600 मीटर तक ऊँची)।

शिवालिक श्रेणियों की रचना रेत, चीका, बजरी आदि से हुई है इन पहाडियों से घग्गर, मारकण्डा, टांगरी, सरस्वती आदि नदियाँ निकलती है। सीमेन्ट बनाने वाला चुना पत्थर इस भाग में मिलता है। पंचकुला से 30 किलोमीटर दूर हरियाणा की सबसे ऊँची चोटी करोह है जो मोरनी पहाडियों में स्थित है जिसकी ओसत उँचाई 1514 मीटर है।

2. गिरीपाद मैदान :–

शिवालिक पहाडियों के दक्षिण में 25 किलोमीटर चौडी पट्टी के रुप मे गिरीपाद मैदान यमुना नदी से घग्गर नदी तक यमुनानगर, अम्बाला व पंचकुला जिलों तक विस्तृत है। इसी मैदान को स्थानीय भाग में 'घर' कहा जाता है। नालो द्वारा बनाऐ गऐ गड्डों को पहाड़ी भाषा में 'चो' कहते हैं। इस मैदान की सामान्यतः ऊँचाई 300 से 375 मीटर है। इस मैदान की प्रमुख नदियाँ घग्गर व मारकण्डा है। शिवालिक पहाडियों को पार करके प्रवाहित होने वाली ये दोनों अन्य नदियाँ अपने साथ भारी मात्रा में रेत, मिट्टी, बजरी, कंकर, पत्थर बहाकर लाती है जिनके निक्षेपण से गिरिपाद मैदान के दक्षिणीं भाग में जलोढ़ पंखों का निर्माण होता हे। यह भाग अपेक्षाकृत कम उपजाऊ है, इसका ढाल उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम है।

3. जलोढ़ मैदान :–

शिवालिक के गिरीपाद क्षेत्र में अरावली तक तथा यमुना और घग्गर नदियों के बीच विस्तृत यह उच्च भूमि का जलोढ़ मैदान है जिसे बांगर भी कहते है समुद्र तल से इस मैदान की औसत ऊँचाई 220 से 280 मीटर के मध्य है। इस मैदानी क्षेत्र में मारकण्डा, सरस्वती तथा चोटांग नदिया प्रवाहित होती है। इस मैदान का ढाल अत्यन्त मंद है जो उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की और है यह मैदान अम्बाला, कैथल, यमुनानगर, करनाल, सोनीपत, फतेहाबाद, रोहतक, जींद, हिसार, सिरसा तथा गुडगाँव व फरीदाबाद जिले तक विस्तृत है।

4. बाढ़ का मैदान :–

यमुना नदी हरियाणा के पूर्वी किनारे में यमुनानगर से फरीदाबाद जिले तक प्रवाहित होती है। यमुना एवं उसकी सहायक नदियों से प्रदेश के पूर्वी भाग बाढ़ के मैदान का निर्माण करते हैं। यह तरंगीत मैदान है जिसमें अन्तर्गन्थित घाटी मार्ग तथा दलदल पाऐ जाते है मारकण्डा द्वारा निर्मित बाढ़ के मैदान को 'बेट' तथा घग्गर द्वारा निर्मित बाढ़ मैदान को 'नैली' कहते है।

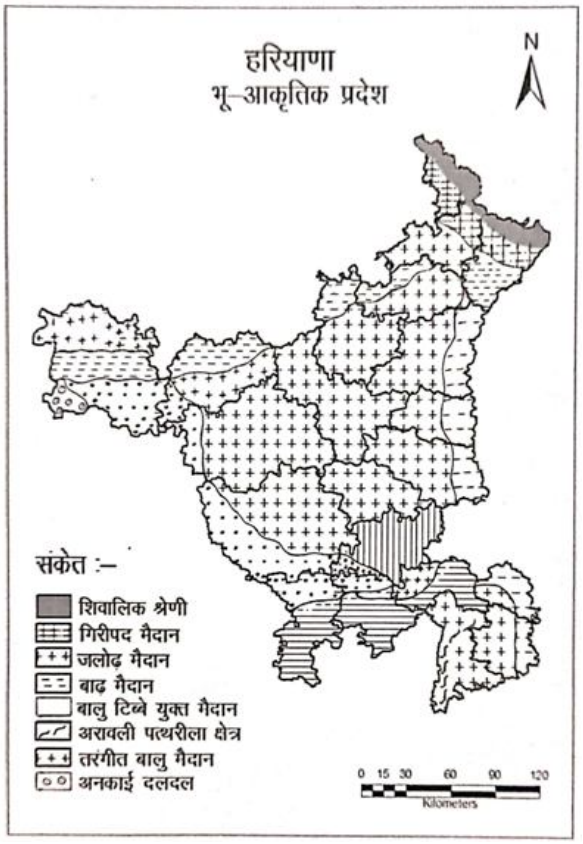

5. बालु टिब्बे का मैदान –

यह बालुमय मैदान पश्चिम में हरियाणा व राजस्थान की सीमा के साथ में विस्तृत है। मारकण्डा द्वारा निर्मित बाढ के मैदान को बेट तथा घग्गर द्वारा निर्मित बाढ़ के मैदान को नैली कहते हैं यह मैदान सिरसा जिले के दक्षिण भाग से प्रारम्भ होकर हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी तथा झज्जर जिलों तक विस्तृत है। राजस्थान से आने वाली गर्म शुष्क पवनो द्वारा लगातार कच्छ की और से लाई गई बालुमय मिट्टी के निक्षेपण से इन बालुका टीलों का निर्माण हुआ है। ये टिब्बे पवन प्रवाह की दिशा में आगे खिसकते रहते हैं। सामान्यतः टीब्बों की ऊँचाई 3–6 मीटर तक होती है लेकिन ये कहीं–कहीं 1.5 मीटर से अधिक उँचे भी है इन टीब्बों के मध्य में निम्न स्थल 'ताल' पाऐ जाते है जिनमें वर्षा ऋतु में जल भर जाने से अस्थाई छिछली झीले बन जाती है जिन्हे ढांठ या बावड़ी कहते हैं इसमें वृक्षों की हरित पट्टी लगाई गई है। इस मैदानी भाग में पाया जाने वाला भूमिगत जल नीचा और खारा हैं।[3]

6. अरावली का पथरीला मैदान :–

यह प्रदेश अरावली पवर्तमाला की अवशिष्ट पहाड़ियों का विस्तार मात्रा है जो हरियाणा के दक्षिणी भाग में स्थित है अरावली पहाड़ी श्रृंखला विश्व की सबसे प्राचीनतम श्रृंखला है।[4] इन पहाड़ियों की नग्न, कठोर और गोलाकार चट्टानें अर्द्ध–शुष्क रेतीले क्षेत्र में वायु अपरदन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। यह मैदान सम्पूर्ण रुप से समान न होकर अत्यन्त उबड़–खाबड़ है इसमें सबसें ऊँचा भाग नारनौल नगर के दक्षिणी–पश्चिम में कुलताजपुर गाँव में 652 मीटर ऊँचा है इसे ढोसी की पहाडियाँ कहते हैं। अरावली की दूसरी श्रेणी दिल्ली के धोला कुआ से करोल बाग होती हुई दिल्ली विश्वविद्यालय तक विस्तृत है इसे दिल्ली में दिल्ली कटक कहते है। अरावली पहाडियों में चूना तथा स्लेट का पत्थर निकाला जाता है। यहाँ वर्षा कम होती है इसलिए काँटेदार झाडियाँ तथा काँटेदार वृक्ष पाऐ जाते है।

7. तरंगीत बालू मैदान :–

तरंगीत बालु मैदान हरियाणा के दक्षिणी भाग में मुख्यतः महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी तथा गुरुग्राम में अरावली पहाडियों के आस–पास बालु का प्रभाव मिलता है। महेन्द्रगढ़ से भिवानी तक के क्षेत्रों में अत्यधिक बालु के टिलों का जमाव देखने को मिलता है। इन टिलों का निर्माण वायु निक्षेपण क्रिया द्वारा हुआ है। रेत के अलावा किसी–किसी क्षेत्र में मैदानी भागों में रेह तथा कंकड युक्त जलोढ़ मिट्टी के निक्षेप भी मिलते है। कहीं–कहीं कटकों के मध्य गर्त भी मिलते हैं जिनमें वर्षा का जल भर जाता है।

8. अनकाई दलदल :–

अनकाई दलदल का अधिकांश हिस्सा हरियाणा के पश्चिमी जिले सिरसा के दक्षिणी भाग मे पाया जाता है यह राज्य का सबसे ऊँचाई वाला भू–भाग है यह समुद्रतल से 200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। सिरसा का नैली क्षेत्र कम उथला तथा चौडा है तथा धरातल का ढ़ाल मंद है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. खुल्लर डी.आर. (2002) भारत का भूगोल एवं प्रयोगात्मक भूगोल, सरस्वती हाऊस (प्रा.लि.) दिल्ली।
2. शर्मा बी.एल., कठमानियाँ संजय एवं सिंहल विपिन (2004) हरियाणा एक अध्ययन, प्रतियोगता साहित्य सीरिज।
3. मिश्रा पी.सी. (1968) 'दी मरुस्थलीकरण' रिजनल स्ट्टड़ीज न्यू दिल्ली, 21वीं आई.जी.यू. पब्लिकेशन।
4. गौतम अलका (2007) भारत का वृहद भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहबाद।
5. हरियाणा एक अध्ययन (2004) प्रतियोगिता साहित्य सीरिज।

डॉ. दीपक कुमार
सहायक–आचार्य, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी (हरि0)